Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 GISRRJ | Volume 8 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

कश्मीर शैव दर्शन में शिव और शक्ति

डॉ0 प्राची अग्रवाल
सहायक आचार्य, मुलतानीमल मोदी कॉलिज मोदीनगर, गाजियाबाद।

Article Info
Volume 8, Issue 1

Page Number : 99-105

Publication Issue :
January-February-2025
Article History
Accepted : 20 Jan 2025
Published : 05 Feb 2025

सारांश– वेदों, उपनिषदों एवं पुराणों में ब्रह्म की त्रिगुणत्मिका प्रकृति को शक्ति माना गया है। श्वेताश्वेतरों उपनिषदनुसार सत्, रज और तमस्वरूपा त्रिगुणत्मिका प्रकृति ही शक्ति है। इसी का मूल ऋग्वेद में मिलता है। ऋग्वेद के रात्रिसूक्त देवीसूक्त एवं श्रीसूक्त में एवं अर्थर्ववेद के 'देव्यर्थवशीर्ष' में भगवती की शक्ति एवं आराधना का विकसित रूप विद्यमान है। शक्ति मत में परेमश्वर को स्त्री रूप माना गया है और उस को शक्ति या परावाक् कहा गया है। उस पराशक्ति के लिए आनन्द भैरवी, महाभैरवी, त्रिपुर सुन्दरी ललिता आदि नाम प्रयुक्त किये गये हैं। साधना के क्षेत्र में शक्ति के भवानी, काली दुर्गा आदि अनेक रूप है। वह परमेश्वर की शक्ति है जो भोग में भवानी, योग में कुण्डलिनी, कोप में काली और समर में दुर्गा है।

मुख्य शब्द– कश्मीर, शैव, दर्शन,शिव, शक्ति, आराधना, योग।

शिव और शक्ति का सम्बन्ध सामरस्य है जो परमतत्व का ही स्वरूप है। परमशिव में शिवशक्ति दोनों समाहित है और यह जगत् दोनों की शाश्वत अभिव्यक्ति है। शिव और शक्ति मूलतः एक है। जो परमशिव है वही परमशक्ति हैं। शक्ति के बिना शिव इच्छाहीन, ज्ञानहीन क्रियाहीन और स्पन्दन में असमर्थ 'शव' मात्र होगें और प्रकाशत्मक शिव के बिना शक्ति आत्म प्रकाश में भी असमर्थ होगी। दोनों ही चिद्रूप होने के कारण स्वरूपतः अभिन्न हैं एवं एक को छोड़कर दूसरा नहीं रह सकता। अग्नि के बिना दाहकता और दाहकता के बिना अग्नि का सत्ता बोध होना संभव नहीं हो सकता। उसी प्रकार शिव में शक्ति और शक्ति में शिव है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

भारतीय संस्कृति निगमागम मूलक है। एक धारा–निगम (वेदमूलक) और दूसरी है आगम (तंत्रमूलक)। दोनों स्वतन्त्र होते हुए भी एक दूसरे के पोषक हैं। निगम कर्म, ज्ञान तथा उपासना का स्वरूप बताते हैं तथा आगम इनके उपायभूत साधनों का वर्णन करते हैं। 'तत्व वैशारदी' में आचार्य वाचस्पति मिश्र आगम की व्युत्पत्ति करते है–

आगच्छन्ति बुद्धिमारोहन्ति अभ्युदयनिःश्रेयसो पाया यस्मात् स आगमः।

आगम साहित्य से ही 'तन्त्रशास्त्र' की उत्पत्ति होती है। सम्पूर्ण शैवदर्शन की मान्यताओं का मूलाधार तन्त्र एवं आगम हैं। वैदिक साहित्य में वेद एवं उपनिषदों का जो स्थान है, शैव दर्शनों में वही स्थान तन्त्र एवं आगम साहित्य को दिया जाता है। वेद की तरह इन्हें भी अपौरूषेय माना जाता है। दुर्भाग्यवश अधिकांश आगम कालचक्र के विधान के फलस्वरूप अपना अस्तित्व खो चुके है। कतिपय उपलब्ध शैव आगम एवं शैव शाक्त तंत्रों से ही 'शैववाद' की अवधारणा प्रचलित हुई।

शैव धर्म का प्राचीनतम रूप हमें हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की खुदाई में प्राप्त शिवलिंग और योनि चिन्हों में दिखाई देता हैं। ऋग्वेद में शिव की उपासना का उल्लेख रूद्र सूक्त और त्र्यम्बक का उल्लेख कतिपय ऋचाओं में मिलता है। सामवेद, शुक्ल यजुर्वेद आदि में रूद्र की प्रार्थना में कहे गये छन्द मिलते हैं। शैव दर्शन के बीज शैवधर्म के रूप में वेदों में प्राप्त होते हैं

मुख्यतः शैव शास्त्रों के आविर्भाव के विषय में 'शिवदृष्टि' में एक विवरण प्राप्त होता है। भगवन शिव ने शैवशास्त्रों के प्रचार के लिए महीर्ष दुर्वासा को आदेश दिया भगवान शिव के आदेश पर दुर्वासा ऋषि ने तीन मानस पुत्रों त्र्यम्बक, अमर्दक और श्रीनाथ को उत्पन्न किया तथा शैवशास्त्र का समस्त रहस्य उन्हें देकर इसके प्रचार प्रसार के लिए नियुक्त किया। अद्वैतवादी शिक्षा उन्होंने त्र्यम्बक को दी जिसने इसका प्रचार किया। कश्मीर शैव दर्शन इसी अद्वैतवादी शिक्षा पर आधारित है।

कश्मीर शैव दर्शन के स्त्रोम शैवागम हैं। शैवागमों का उद्भव अनादिकाल से माना जाता है। उनका कालक्रम से आविर्भाव और तिरोभाव होता रहता है। कश्मीर शैवागमों में मालिनी विजयोत्तर तन्त्र, स्वछन्द तन्त्र, विज्ञान भैरव, नेत्र तन्त्र, स्वछन्द तन्त्र, विज्ञान भैरव, नेत्र तन्त्र रूद्यामल तन्त्र, आनन्द भैरव आदि प्रमुख हैं।

आगम काल के पश्चात् कश्मीर शैव दर्शन के विकास में प्रथम ऐतिहासिक नाम वसुगुप्त हैं जिन्होंने शैवागमों को व्यवस्थित रूप दिया। वसुगुप्त को भगवान शिव द्वारा स्वप्न में शिव–सूत्रों की प्राप्ति हुई। शिवसूत्रों को ही शैवदर्शन के आधार सूत्र माना जाता है।

कश्मीर शैव दर्शन के विकास में दूसरा महत्वपूर्ण नाम सोमानन्द का है। जिन्होंने शैव दर्शन को तर्कपूर्ण दार्शनिक रूप प्रदान किया। इनके पश्चात् उनके पुत्र और शिष्य उत्पलेदव तत्पश्चात् लक्ष्मणगुप्त और अभिनवगुप्त शैव दर्शन के सुप्रसिद्ध आचार्य हुए। अभिनव गुप्त की रचनाओं में कश्मीर शैव दर्शन का परिमार्जित विकसित रूप प्राप्त होता है। इनके पश्चात् क्षेमराज कश्मीर शैव दर्शन के प्रमुख आचार्य हुए।

शिव और शक्ति स्वरूप–

कश्मीर शैव दर्शन में परमशिव को विश्व का कारण और एकमात्र सत्ता माना गया है। शिव प्रमाता और प्रमेय, ज्ञाता और ज्ञेय दोनों हैं। शिव अनुभव कर्त्ता भी हैं और स्वयं अनुभूत पदार्थ भी। अपने आन्तरिक स्वरूप में निहित अद्भुत शक्ति के माध्यम से वह स्वयं को ब्रह्माण्ड के रूप में अभिव्यक्त करते हैं और विभिन्न अवस्थाओं को धारण करने पर भी अपने यथार्थ स्वरूप से च्युत नहीं होते।

कश्मीर शैव दर्शन में शिव को अनिर्वचनीय सत्ता माना गया है। वह निर्गुण और सगुण दोनों अवस्थाओं को प्राप्त है। निर्गुण होने से शिव का निर्वचन नहीं हो सकता। वह तीनों गुणों (सत्व, रंज व तम) से परे निर्गुण, निराकार, मन वाणी से अगम, अगोचर और मानव बुद्धि के लिए अज्ञेय है। शिवत्व प्राप्त होने पर ही 'शिव' का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। शिव सगुण है क्योंकि उनकी चित्, आनंद शक्तियाँ गोचर एवं अगोचर स्तर पर व्यक्त होती हैं। परमशिव की इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्ति सृष्टि के समय में अभिव्यक्त होती हैं। शिव की सत्ता के लिए प्रमाणों की आवश्यकता नहीं हैं क्योकि सभी प्रमाण शिवसत्ता को स्वीकार करते हैं। शिव आत्म तत्व है और आत्मा की सत्ता स्वतः सिद्ध है। शिव सत् चित् और आनन्दस्वरूप है।

शक्ति की अवधारणा–

विश्व के समस्त प्राचीनतम साहित्यों में किसी न किसी रूप में शक्ति की परिकल्पना मिलती है। वेदों में परमपुरूष के दो रूप है– ब्रह्म एवं शक्ति। परमपुरूष स्रष्टा ने विश्वनिर्माण की इच्छा से स्वयं को दो रूपों में विभक्त किया। ऋग्वैदिक मंत्रों के अनुसार सम्पूर्ण जगत् शक्ति निर्मित है। चराचरविश्व के सभी पदार्थो का आदि और अन्त एकमात्र महाशक्ति है। सर्वभूतों में जो मातृ, प्राण, ज्ञान, निद्रा, प्रकृति स्मृति आदि रूपों में अवस्थित है वही शक्ति सर्वोच्च है। इसके बिना सम्पूर्ण जगत् निष्क्रिय है। चराचर में इसी महाशक्ति के विविध रूप चरितार्थ हो रहे है। भौतिक विज्ञान में प्रकाश, विद्युत, ताप, चुम्बक आदि शक्ति के विविध रूप हैं। शक्ति न तो शून्य से उत्पन्न की जा सकती है और न शून्य में उसका लय हो सकता है। अविनाशी द्रव्य अविनाशी शक्ति का रूपान्तरण है। अतएव समस्त चराचर के स्थूल और सूक्ष्म पदार्थ शक्ति के ही परिवर्तित रूप है।

कश्मीर शैव दर्शन की प्रमुख विशेषताओं में है परमशिव की अवधारण में शक्ति का समावेश। परमशिव में निहित क्रिया उनकी स्वाभाविक शक्ति है। स्वातन्त्र्य परमशिव की पराशक्ति है। शक्ति शिव से सर्वथा अभिन्न है। चित् शिव की चिद्रूपिणी शक्ति के रूप में प्रकाशित होता है।

कश्मीर शैव दर्शन में प्रयुक्त स्वातन्त्र्य, शक्ति, अहंता, स्फुरता, विमर्श आदि पद परम शिव की स्पन्दात्मक अवस्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। अर्हता समगता की गति पर जोर देता है, स्फुरता अभिव्यक्त के अभिव्यक्ति का संकेत है। विमर्श अनिर्वचनीय की वचनीयता को अभिव्यक्त करता है और स्वातन्त्र्य असंभव के निर्माण की क्षमता के लिए प्रयुक्त होता हैं परमतत्व की दोनो अवस्थितयों को प्रकाश विमर्श कहा जाता है। प्रकाश शुद्ध अपरिवर्तनीय, साक्षी, सविभौम चैतन्य की अवस्थिति है। विमर्श वह शक्ति है। तो आत्मचेतना इच्छा ज्ञान और क्रिया को क्रम से बढ़ाती है।

शक्ति के भेद–

मुख्यातया शक्ति को समझने के लिए उसके दो भेद किये जा सकते हैं– एक प्रकार की शक्तियाँ वे शक्तियाँ हैं जो शिव के स्वरूप में ही निहित हे तथा दूसरे प्रकार की शक्तियाँ 'वे शक्तियाँ' हैं जिन्हें शिव सृष्टि के क्रम में स्फुटित करते हैं तथा जो शिव के स्वातन्त्र्य पर निर्भर हैं। चित् शक्ति और आनन्द शक्ति को शिव की स्वरूप शक्ति कहा जा सकता है। इन शक्तियों के कारण ही शिव विमर्श मय तथा आनन्दरूप हैं। इच्छा, ज्ञान और क्रिया शक्तियों को शिव की स्वातन्त्र्य शक्ति कहा जा सकता है जिन्हें वह सृष्टि की अभिव्यक्ति के क्रम में प्रकट करता है।

1. **चित् शक्ति–** चिदात्मा की प्रकाश रूपता ही उसकी चित् शक्ति है– प्रकाशरूपता चिच्छक्तिः।' चेतना का स्वरूप ही शक्तिरूप हैं, इसलिए इसे चितशक्ति कहा जाता है। चेतना की इस विशेषता के कारण ही शिव को स्वप्रकाश तथा आत्मचेतना से युक्त कहा जाता है। यह शक्ति परमतत्व शिव की आत्मप्रकाशन की शक्ति है। जिसके द्वारा परमशिव प्रकाशय वस्तु के अभाव में भी स्वतः प्रकाशित होते हैं और इसी प्रकाश रूप आश्रय में विश्व के समस्त तत्त्वों का प्रकाशन होता है।

शिव की चित्तशक्ति' ही आत्मचेतना और आत्मप्रकाश दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। चित्शक्ति ही परमशिव का 'स्वातन्त्र्य' तथा उसका 'माहेश्वर्य' है। यह अन्य समस्त शक्तियों को अपने में समाहित करती है। इस शक्ति से परमशिव प्रकाश मात्र न रहकर विमर्श रूप भी है। इसे 'पराशक्ति' भी कहा जाता है। इस चित् शक्ति का शास्त्रीय नाम अनुत्तर अर्थात् वर्णमाला का प्रतीक ''अ'' है।

आनन्द शक्ति– कश्मीर शैव दर्शन में आनन्द भी स्पन्दन या क्रिया रूप है। इस शक्ति के द्वारा ही शिव आनन्दमय है तथा आनन्द की अनुभूति भी करता है। इस स्वातन्त्र्य भी कहा जाता है–

'स्वातन्त्र्यम् आनन्दशक्ति।'

यह परम इच्छा है जो बिना किसी बाह्य वस्तु की सहायता के सब कुछ करने में समर्थ है। आनन्द शक्ति की अवस्थिति में परमशिव शक्ति से अभिहित होता है। चित् और आनन्द को शिव का स्वरूप कहा जा सकता है क्योंकि चित् अंश 'शिव भाव' है और आनन्द अंश 'शक्ति भाव' है। चित् अंश (प्रकाश) और आनन्द अंश (विर्मश) का सामरस्य ही परमभाव है। यह अवस्था परमशिव कही जाती है। इस अवस्था से किसी एक अंश को अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि चित् आनन्दस्वरूप है और आनन्द बिना चित् के नहीं रह सकता। आनन्द शक्ति का प्रतीक 'आ' है।

इच्छा शक्ति– कश्मीर 'शैवदर्शनानुसार शिव में सृष्टि रचना की इच्छा का स्फुरण ही इच्छा शक्ति है। इसके द्वारा शिव अपने आनन्द के प्रकाशन की इच्छा करता है–

'तच्चमत्कार इच्छा शक्ति।'

इच्छाशक्ति से ही परमेश्वर विभिन्न ज्ञातृ–ज्ञान–ज्ञेय रूपों में आत्मप्रकाशन करता है–

'भवत्युन्मुखिता चित्तासेच्छाया प्रथमा त्रुटिः।

विश्व की सिसृक्षा ही शक्ति भाव है। वास्तव में 'इच्छा– आनन्द का अन्वेषण करने अथवा खोज निकालने की शक्ति है। जब परमेश्वर की इच्छा शक्ति का उन्मेष होता है तब विश्व 'इदं' रूप से अर्थात् बाह्य रूप में (आत्म स्वरूप के बाहर) प्रकट होता है। यद्यपि आत्मस्वरूप के बाहर कुछ भी नहीं हैं किन्तु भगवान के आत्मसंकोच के कारण 'इदं' रूप में बाह्ययाभाव का स्फुरण होता है। इस अवस्थिति में परमशिव 'सदाशिव ' या 'सादाख्य' तत्व से अभिहित होता है।

सृष्टिक्रम की दृष्टि से शक्ति की अभिव्यक्ति में इस अवस्था को 'पश्यन्तीवाक्' कहा गया है। इस अवस्था में स्थूल वाच्य–वाचकमय विश्व को प्रस्फुटित करने की 'परावाक्' में इच्छा उत्पन्न होती है। इस दशा में 'इदम' केवल इच्छा रूप में रहता है। सदाशिव पश्यन्ती दशा का सूचक है। पंच शक्तियों की दृष्टियों से यह 'इच्छा शक्ति' का स्तर है। यहाँ जगत् इच्छा रूप में वर्तमान रहता है। जैसे–चित्रकार के मन में चित्र प्राथमिक अवस्था में एक अस्फुट एवं धुंधले रूप में रहता हैं पश्यन्ती वाक् में कारण रूप चैतन्य की स्फूर्ति रहती है। इसका प्रतीक 'ई' है।

ज्ञानशक्ति–

कश्मीर शैव दर्शनानुसार सृष्टि की बहिमुर्खता ही 'इच्छा शक्ति' के अनन्तर ज्ञान शक्ति के आविर्भाव का कारण होती है। दूसरे शब्दों में इच्छा शक्ति जब ज्ञेयता का रूप धारण करती है तो उसके अभिव्यक्त

होने की शक्ति को 'ज्ञान शक्ति कहा जाता है। ज्ञान शक्ति का आविर्भाव होने पर विश्व अव्यक्तावस्था का परित्याग कर अभिव्यक्त स्थिति को प्राप्त होता है। इच्छा शक्ति के प्रभाव से जो इच्छा रूप में अव्यक्त रूप से विद्यमान था वही ज्ञान शक्ति के विकास में अभिव्यक्त होकर ज्ञानस्वरूप में स्थित होता है। शिव को अपनी इच्छा का ज्ञान होता है, इसलिए यह अवस्थिति अमर्शात्मक कही जाती है। ज्ञान शक्ति सम्पन्न शिव को 'ईश्वर तत्व से अभिहित किया जाता है।

सृष्टिकर्त्री शक्ति की दृष्टि से ज्ञान शक्ति की यह अवस्था 'मध्यमा वाक्' कही गयी है। मध्यमा भूमि 'मन्त्रमयी' कही जाती है, क्योंकि मन्त्र रूप में मध्यमा भूमि अपने को प्रकट करती है। मन को शोधन और उससे विज्ञान के द्वार को खोलने की सामर्थ्य की प्राप्ति क्रमशः इसी स्थान में होती है। ज्ञान शक्ति का द्योतक वर्ण 'उ' है।

क्रिया शक्ति– कश्मीर शैव दर्शनानुसार– कोई भी आकार धारण करने की परमेश्वर की योग्यता क्रिया शक्ति कहलाती है। 'मैं ऐसा हो जाऊँ इस प्रकार जो विचित्र रूप बनाने की इच्छा है। वही जब कार्य का आकार धारण करती है। तो क्रिया कही जाती है। इस शक्ति के द्वारा शिव कोई भी रूप धारण कर सकते हैं। घट पट आदि आभास रूप जगत्, जन्म स्थिति प्रलय आदि भाव विकार और उनके भेद आदि हजारों क्रियारूप में रहने के इच्छुक 'शिव' हैं। यह समस्त जगत् शिव की क्रिया शक्ति का रूप है। इस अवस्था में परमशिव को 'सद्विद्या' कहा जाता है।

सृष्टिक्रम की दृष्टि से क्रिया शक्ति 'बैखरी वाक्' कही गयी है।

पराशक्ति शुदद्धचेतनारूप सर्वोच्च शक्ति है। कार्यो की विभिन्नता के कारण यह अपने को इच्छाशक्ति, ज्ञान शक्ति और क्रिया शक्ति के रूप में प्रकट करती है। 'इच्छा शक्ति' के द्वारा शिव जीवों के प्रति अनुग्रह के कारण उनको मल से मुक्त करने एवं आनन्दावस्था की अनुभूति कराने की 'इच्छा' करता है। 'ज्ञानशक्ति' से शिव जीवों के अशुभों को जानता है तथा उनसे मुक्ति के लिए जीव को शरीर इन्द्रियादि प्रदान करता है। ज्ञान शक्ति के द्वारा इच्छा शक्ति क्रियान्वित होती है। क्रिया शक्ति से शिव व्यावहारिक जगत् का विकास अथवा सृष्टि करता है। 'क्रिया शक्ति' के द्वारा आत्मा को स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर की प्राप्ति होती है। ज्ञान व क्रिया शक्ति से ही शिव स्वयं को पाँच रूपों में प्रकट करते है। जब शिव ज्ञान शक्ति के द्वारा क्रियाशील होते हैं, तो उसे शिवतत्व कहा जाता है। तब वह क्रिया शक्ति के द्वारा क्रियाशील होते हैं, तब उसे 'शक्तितत्व' कहते है। ज्ञान और क्रिया की साम्यावस्था में शिव को 'सदशिवतत्व' कहा जाता है। जब ज्ञान शक्ति पर क्रिया की प्रधानता होती है तब उसे 'महेश्वर तत्व' कहते है तथा ज्ञान जब क्रिया से अधिक प्रधान

होता है तब उसे 'शुद्धविद्यातत्व' कहते हैं। शक्ति के इन पाँचों प्रकारों से सम्पन्न 'शिव' या ब्रह्म'' अपने आप समस्त विश्व को अभिव्यक्त करते हैं।

वस्तुतः यह जगत् शिव की 'शक्ति' का ही विस्तृत रूप है जिसे परमशिव ने अपने में 'स्वेच्छा' से अभिव्यक्त किया है। शक्ति और शिव में अपरिहार्य सम्बन्ध है। बिना शक्ति के शिव जड़वत हैं क्योंकि शक्ति से ही शिव को 'अहम्' का बोध होता है, बिना शिव के शक्ति भी नहीं रह सकती क्योंकि शक्ति के लिए आधार आवश्यक है। शिव–शक्ति सर्वव्यापक है और इन्हें किसी भी अवस्था में पृथक नहीं किया जा सकता।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. ऋग्वेद – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
   स्वछन्द तन्त्र – क्षेमराज, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. तन्त्रसार अभिनवगुप्त – चौखम्बा, सुरभारती प्र.वारणसी
3. तन्त्रालोक – परमहंस मिश्र, चौखम्बा
4. भारतीय दर्शन – उमेश मिश्र, चौखम्बा
5. भारतीय दर्शन – राधाकृष्णन सर्वपल्ली राजपाल एण्ड सन्स प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भारतीय दर्शन – विश्वनाथ शर्मा, चौखम्बा
7. शैव सिद्धान्त दर्शन – कैलाशपति मिश्र–अर्द्धनारीश्वर प्रकाशन, वाराणसी